

उमराव सिंह जाटव का कथा साहित्य दमन और प्रतिकार का आख्यान

डॉ अजय कुमार बिन्द

असि प्रोफेसर – हिंदी

राजकीय महाविद्यालय, नानौता, सहारनपुर

drajaybind@gmail.com

रचनाकार उमराव सिंह जाटव का जन्म 08 फरवरी 1948 को चिटहरा, गौतम बुद्ध नगर उ०प्र० में हुआ। उनका पिता भारतीय सेना में सैनिक थे। वे द्वितीय विश्व युद्ध में वे मिश्र और तुर्की में मित्र राष्ट्रों के लिए मोर्चे पर लड़ चुके थे। सैन्य परंपरा उनके परिवार में विरासत के रूप में स्थापित हुई। उनके बड़े भाई भी भारतीय सेना में शामिल हुए। पिता की जागरूकता का शायद यह प्रभाव था कि उन्हें ईसाई मिशनरी में पढ़ने का मौका मिला। लेकिन पॉचवी से आगे पढाई के लिए उन्हाने स्थानीय स्कूल में प्रवेश किया। वहाँ से इण्टर पास करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए उन्होने गाजियाबाद के एम.एम.कालेज कालेज में प्रवेश लिया। बी.ए. और चित्रकला में एम.ए. की शिक्षा प्राप्त की। एम.ए. में शिक्षा के दरम्यान ही उनका चयन पुलिस उपाधीक्षक के पद पर हो गया था। लेकिन दुर्घटना के कारण वे उस वर्ष नौकरी में प्रवेश नहीं पा सके। उन्होने इस पर हार नहीं मानी। उनके बड़े भाई ने उनका सम्बल बढ़ाया। पुनः परीक्षा में सफलता प्राप्त कर उन्होने उसी पद को प्राप्त किया। उन्होने पूरे देश आतंकवाद ग्रस्त और नक्सलवाद के प्रभाव वाले क्षेत्रों में कार्य किया। उन्हें अपनी सेवाओं के लिए कठिन सेवा पद और राष्ट्रपति द्वारा सराहनीय सेवा पदक प्राप्त किया। पुलिस की उन्होने 36 वर्ष की सेवा की और वर्ष 2008 में पुलिस उपमहानिरीक्षक के पद से सेवानिवृत्त हुए। स्वयं अपने एक परिचय में उन्होने बताया कि बचपन से ही साहित्य की ओर उनका झुकाव रहा। आठ वर्ष की अवस्था में ही उन्होने पहली कहानी लिखी। माहौल इस प्रकार था कि वह कहानी कोई फल दिए बिना ही बरसात में गल गई। लेकिन उनके मन में साहित्य रचना की ललक बनी रही। इस ललक को उन्होने अपनी सेवा के आखिरी पड़ाव में ठोस रूप देना शुरू किया। उनकी रचनाएं निम्न हैं—

- कविता ; अतीत से झांकते सम्बन्ध
; प्रतिरोध के स्वरो पर सवार (कविता संग्रह)
- कहानी संग्रह ; आधे दलित का दुख
- उपन्यास ; थमेगा नहीं विद्रोह